आधुनिक कक्षाओं में पारम्परिक ज्ञान

नमामि शर्मा

2000 के दशक के उत्तरार्ध में, जब मैं पर्यावरण संरक्षण और पर्यावरण उद्धार के क्षेत्र में काम करने वाले संगठनों से जुड़ी थी, तब मैं ऐसे कई समुदायों से मिली जो अपने जंगलों का संरक्षण कर रहे थे। इन समुदायों का वनों के साथ जो रिश्ता था, उसने मुझे मोहित कर दिया। मैंने महसूस किया कि यद्यपि वनों का संरक्षण धर्म, अन्धविश्वास, मिथक, पारिस्थितिक सेवाओं और जीवन-निर्वाह पर आधारित था, फिर भी ये व्यवहार जो संरक्षण के व्यवहारों से गहराई से जुड़े हुए हैं, पारम्परिक ज्ञान प्रणालियों को भी जीवित रखते हैं। पारम्परिक ज्ञान, संरक्षण के व्यवहारों से उत्पन्न होता है और पारिस्थितिक जागरूकता और चेतना फैलाने में भी योगदान देता है।

पर्यावरणीय आचार विचार का भविष्य

अपने क्षेत्रीय दौरों के दौरान मैंने अनुभव किया कि समुदाय के युवा अपने बड़े-बुजुर्गों जैसी मान्यताएँ नहीं रखते थे। उत्तराखण्ड में, युवाओं का ज़ोर शिक्षा प्राप्त कर सफ़ेदपोश नौकरी पाने और अन्ततः वहाँ से निकलकर कहीं और जाने यानी प्रवासी हो जाने पर था। मध्य प्रदेश में कई कारक प्रभावी थे। कान्हा राष्ट्रीय उद्यान के लगातार विस्तार और इसके लिए संरक्षित क्षेत्र की माँग के कारण *बैगा* समुदाय को वनों से अलगाव और विस्थापन का सामना करना पड़ा। लीज़ पर ज़मीन लेकर तमाम रिसॉर्ट और होटल खुल गए जिन्होंने बैगाओं को सहयोगी कर्मचारियों के रूप में नियुक्त करना शुरू कर दिया। इस समुदाय के सदस्य आस-पास के शहरों में चले गए। धीरे-धीरे युवा पीढ़ी में वनों से अपनेपन और जुड़ाव की भावना ख़त्म होने लगी।

अरुणाचल प्रदेश में, वनों की स्थिति अवर्गीकृत है और स्वामित्व समुदाय के पास है। वहाँ मैंने देखा कि यद्यपि युवा पीढ़ी में संरक्षण की भावना कम हो गई है, फिर भी धार्मिक भय बना हुआ है। एक बार, एक गाँव में पहाड़ी में एक सुरंग के निर्माण के लिए सेना के साथ गाँव ने पहाड़ी का सौदा किया। इसके बाद गाँव के कई लोग गम्भीर रूप से बीमार पड़ गए। ग्रामीणों ने इसके लिए प्रकृति माँ के प्रति किए गए उस 'अनादर' को ज़िम्मेदार माना जो उन्होंने पहाड़ी का सौदा करके किया था। युवा पीढ़ी धीरे-धीरे खेती और याक पालन के पारम्परिक कार्यों से दूर हो रही है। युवाओं और जंगलों के बीच की दूरी बढ़ती जा रही है।

मैंने स्कूलों का दौरा किया और विभिन्न स्थानों पर युवा विद्यार्थियों से बातचीत की। मैंने महसूस किया कि आधुनिक स्कूली पाठ्यचर्या शायद ही कभी पारम्परिक ज्ञान प्रणालियों को शामिल करती है या विद्यार्थियों को पर्यावरणीय आचार विचार विकसित करने में संलग्न करती है। मैंने स्कूली शिक्षा में ज्ञान प्रणालियों का एक पदानुक्रम भी महसूस किया — पारम्परिक ज्ञान प्रणालियाँ पुरानी पीढ़ी का विशेषाधिकार होगा और युवा बिना किसी हिचकिचाहट के इस ज्ञान के प्रति अपनी अज्ञानता को स्वीकार करेंगे। पारम्परिक ज्ञान प्रणाली को, बच्चों के बीच पर्यावरणीय आचार विचार पैदा करने की इसकी क्षमता को पहचाने बिना, 'पुराने ढर्रे' के रूप में ख़ारिज कर दिया जाएगा। उदाहरण के लिए, एक कुमाऊँनी (उत्तराखण्ड के कुमाऊँ क्षेत्र का व्यक्ति) पारम्परिक बावड़ियों (नौला) के जल स्तर को बनाए रखने में बाँज के पेड़ के महत्त्व को जानता है। राज्य पाठ्यचर्या में पढ़ रहा एक बच्चा, जिसे यह ज्ञान नहीं मिलता, वह बाँज के जंगलों की रक्षा के महत्त्व को नहीं देख पाएगा और व्यवस्थित रूप से जंगलों से अलग हो जाएगा।

इसलिए, कक्षा में पर्यावरण-केन्द्रित आदर्श उत्पन्न करने के लिए बच्चों को विभिन्न गतिविधियों में शामिल करना अनिवार्य हो जाता है। तत्काल प्रश्न है — इसे कैसे करें? शिक्षक कक्षा में केवल जानकारी देने में लगे हुए हैं। उदाहरण के लिए, बच्चे प्रकाश संश्लेषण की घटना को जान सकते हैं लेकिन यह नहीं जानते कि यह उनके जीवन को कैसे प्रभावित करता है।

पारिस्थितिक चेतना को विकसित करने के लिए कक्षा की गतिविधियाँ

हमारे स्थानीय 'दोस्तों' को समझना

अरुणाचल प्रदेश के पश्चिमी कामेंग ज़िले में मैंने डब्ल्यूडब्ल्यूएफ (World Wildlife Fund) की टीम को स्कूलों में एक सुन्दर प्रयास करते हुए देखा। वे छोटी-छोटी गतिविधियों की क़िताबें लेकर आए थे जिनमें बिन्दु को जोड़ना, वर्ग पहेली, रिक्त स्थान को रंगना, समानताएँ खोजना, रिक्त स्थान भरना और शब्दों

का मिलान करना जैसी गतिविधियाँ थीं। सभी गतिविधियों को ज़िले में मौजूद जंगली प्रजातियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया गया था। उदाहरण के लिए, एक गतिविधि विषैले और ग़ैर-विषैले साँपों के बीच अन्तर करने के लिए और साँपों को संरक्षित करने के महत्त्व पर थी। डब्ल्यूडब्ल्यूएफ के सुगमकर्ताओं ने इन गतिविधियों पर कक्षा में सत्र लिया था और शिक्षकों को प्रशिक्षित किया था जिससे वे इन्हें कक्षा में जारी रख सकें। इनमें जानवरों के स्थानीय नामों का इस्तेमाल किया गया था।

हर्बेरियम

विद्यार्थियों को वनस्पतियों की स्थानीय प्रजातियों को इकट्ठा करने और उनके स्थानीय नाम, प्रमुख विशेषताओं और प्रत्येक के उपयोग के साथ हर्बेरियम बनाने के लिए कहा जा सकता है। इस प्रक्रिया में वे पौधे को उसके नाम और उपयोग से जानेंगे, उसकी पहचान करने में सक्षम होंगे और पारिस्थितिक तंत्र में उसकी भूमिका को भी समझ सकेंगे।

बोओ और बढ़ो

प्रत्येक बच्चे को एक छोटा गमला और एक बीज दिया जा सकता है और बीज बोने में मदद की जा सकती है। बच्चे को प्रत्येक दिन बीज का निरीक्षण करने और एक निरीक्षण पुस्तिका बनाने के लिए कहा जा सकता है। पौधे को एक नाम भी दिया जा सकता है। जैसे-जैसे पौधा बढ़ता है, शिक्षक इस बारे में थोड़ी बात कर सकते हैं कि पौधा कैसे साँस लेता है, वह कैसा महसूस करता है और कैसे संवाद कर सकता है।

हमारी जीवित मिट्टी

बच्चों को बाहर ले जाकर मिट्टी खोदने और मिट्टी के कीड़ों और कृमि की पहचान करने के लिए कहा जा सकता है। शिक्षक मिट्टी की गुणवत्ता बनाए रखने में प्रत्येक कीड़े-कृमि की भूमिका के बारे में विस्तार से बता सकते हैं। यह गतिविधि बच्चों की इस धारणा को बदल देगी कि 'मिट्टी' गन्दी होती है और वे धीरे-धीरे इसे छूने में सहज होना सीखेंगे। शिक्षक बच्चों से मिट्टी को छूने की भावना का वर्णन करने के लिए भी कह सकते हैं।

हमारे भोजन को पैदा करना

नागालैण्ड के कोहिमा के विश्वेमा गाँव में, 'के खेल स्कूल› (K Khel school) ने हाल ही में अपने मिड-डे मील किचन को चलाने के लिए सुर्खियाँ बटोरी थीं, जिसमें विद्यार्थियों द्वारा स्कूल के पीछे बने एक छोटे भूखण्ड पर उगाई गई सब्ज़ियाँ बनती हैं। सब्ज़ियाँ जैविक तरीक़े से उगाई जाती हैं। ऐसा करने से बच्चे भोजन पैदा करने और अपनी पारम्परिक ज्ञान प्रणाली

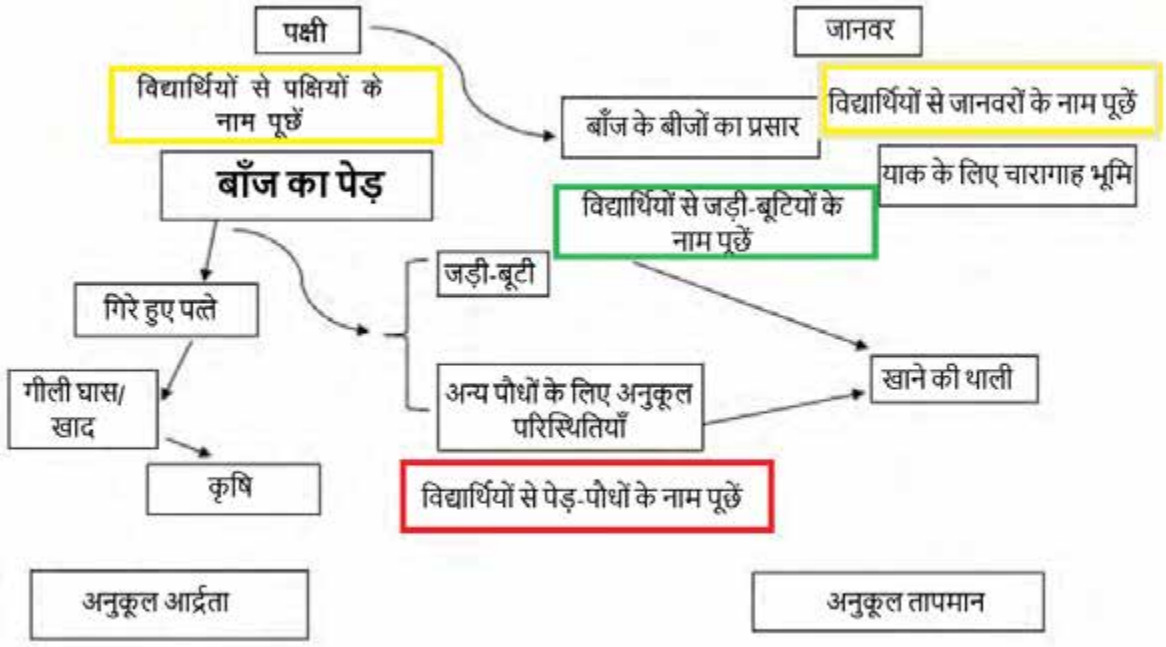

चित्र-1 : जैव विविधता को बनाए रखने को महत्त्व को समझना।

के बारे में सीखते हैं। वे मिट्टी और धरती माता के साथ एक मज़बूत सम्बन्ध भी विकसित करते हैं।

एक दुनिया, एक परिवार

बच्चों को विभिन्न स्थानीय पारिस्थितिकी प्रणालियों में फ़ील्ड ट्रिप पर ले जाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम कामेंग ज़िले के थेमबांग गाँव के बच्चों को एक अधिक ऊँचाई वाले ट्रेक पर ले जाया जा सकता है और उन्हें जंगलों में दिखाई देने वाली प्रजातियों की गणना करने को कहा जा सकता है। फिर कम ऊँचाई पर भी यही अभ्यास दोहराने को कहा जा सकता है। यह एक ऐसे प्रजाति-सम्बन्ध आरेख को तैयार करने में मदद प्रदान करेगा जिसमें वे विभिन्न प्रजातियों और विभिन्न ऊँचाइयों के बीच सम्बन्ध को रेखांकित करेंगे। एक चर्चा में आगे बताया जा सकता है कि कैसे सभी प्रजातियाँ एक बड़े परिवार का हिस्सा हैं और यह क्यों महत्त्वपूर्ण है कि सभी प्रजातियों की रक्षा की जाए।

उक्त चार्ट का उपयोग मोनोकल्चर की भ्रान्ति दिखाने के लिए किया जा सकता है। चार्ट में, एक निश्चित प्रजाति की संख्या बढ़ाई जा सकती है और बच्चों को इसके परिणामों का वर्णन करने के लिए कहा जा सकता है। मान लीजिए कि सभी बाँज के पेड़ों को काट दिया जाए और इसकी बजाय अधिक ऊँचाइयों पर केवल चीड़ के पेड़ लगाए जाएँ, तो वे कौन-सी प्रजातियाँ हैं जो इससे सीधे प्रभावित होंगी? यह मनुष्यों सहित 'परिवार' के अन्य सदस्यों को कैसे प्रभावित करेगा? इस प्रकार जैव विविधता को बनाए रखने के महत्त्व को समझाया जा सकता है।

लोककथाओं में पारिस्थितिकी

बच्चों को लोककथाओं से कहानियाँ एकत्र करने के लिए कहा जा सकता है। शिक्षक प्रत्येक सत्र में एक कहानी ले सकते हैं। शिक्षक को कहानियों का पहले से विश्लेषण करना होगा ताकि वह चर्चा को इस तरीक़े से सुगम बना सके कि पारम्परिक कहानियों में प्रकृति के घटकों को उजागर किया जा सके।

त्योहार और प्रकृति

स्थानीय त्योहारों के दौरान, बच्चों को अनुष्ठानों में प्रकृति के समन्वय की पहचान करने के लिए कहा जा सकता है। शिक्षक सम्बन्धित प्रजातियों के महत्त्व के बारे में विस्तार से बता सकते हैं। सीखने-सिखाने की प्रक्रियाएँ बच्चों में एक मज़बूत पर्यावरणीय आचार विचार को विकसित करने में बहुत प्रभावी हो सकती हैं। यह पारिस्थितिक रूप से जागरूक वयस्कों की भावी पीढ़ी को विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। मानव-केन्द्रवाद (anthropocentrism) को पर्यावरण-केन्द्रवाद (ecocentrism) से बदलने की प्रक्रिया केवल कक्षा में ही शुरू हो सकती है।

नमामि शर्मा भारत के विभिन्न हिस्सों में वन संरक्षण के कार्यों से जुड़ी हुई हैं। वर्तमान में, वे तेजपुर विश्वविद्यालय के सामाजिक कार्य विभाग में पढ़ाती हैं और अपने विद्यार्थियों के साथ साझेदारी में इस विषय के अन्वेषण को जारी रखे हुए हैं। उनसे namamisharma@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : जितेन्द्र 'जीत' **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय